International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2017; Page No. 18-19

काशीनाथ सिंह के संस्मरण 'याद हो कि न याद हो' एक अध्ययन

डॉ. एस. प्रीति

विभाग अध्यक्ष, हिंदी विभाग, विज्ञान एवं मानविकी संकाय, एस.आर.एम विष्वविद्यालय, कट्टनकुलाथुर, तमिल नाडु, भारत।

प्रस्तावना

हिंदी में समान्यता गद्य साहित्य् के अंतर्गत उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, आलोचना आदि का पठन–पाठन होता रहा है। बीसवीं सदी में कई विधाएं धीरे–धीरे विकसित होकर साहित्य में मान्यता प्राप्त करने लगी है। संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, व रिपोतार्ज आदि कई विधाएं इसके अंतर्गत शामिल हैं।

साहित्यकार जब अतीत का मंथन और पुनरावेशण करता है तभी संस्मरण के लिए जमीन तैयार होती है। जिसमें समृति प्रमुख भूमिका निभाता है। संस्मरण में संस्मरणकार के वे क्षण अंकित होते है जो उसने स्वयं जिये है। इसमें लेखक अपने प्रिय व्यक्ति के साथ होने वाली रोचक घटनाओं का लेखा–जोखा कल्पना से अनुरोधित कर मधुर–कटु स्मृतियों का वर्णन करता है। जिनमें उसके अपने अनुभूतियां भी चित्रित होती है।

डॉ0 काषीनाथ सिंह का संस्मरण 'याद हो कि न याद हो' का रचनाकाल सन् 1992 ई. रहा है। इसमें कुल सात संस्मरण निहित है। पहला संस्मरण 'होलकर हाऊस में हजारीप्रसाद दिवेदी जी का चंडीगढ़ से काषी विष्वविद्यालय में पहुंचने तक का मार्मिक चित्रण किया गया है। साहित्य और राजनीति का संबंध बिल्कुल नहीं होता किन्तु जब ये एक दूसरे से जुड़ते है तो दिषाहीन हो जाते हैं। अद्भूत प्रतिभा के संपन्न द्विवेदी जी इस पद पर आने के बाद उनकी अपनी स्वतंत्रता छीन गई और विष्वविद्यालय के राजनीति के तहत उन्हें दबा दिया गया जिसकी विविषता को उजागर करने में वे असमर्थ हो गए। यह संस्मरण द्विवेदी जी के बहाने काषी विष्व विद्यालय की ही नहीं पूरे भारतवर्ष के विष्वविद्यालय में हो रहे षैक्षाणिक व्यवस्था एवं घटिया राजनीति को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

दूसरा संस्मरण दंतकथाओं में त्रिलोचन इसके द्वारा डॉ. काषीनाथ सिंह ने सुलतानपुर जिले के चिरानी पट्टी गांव के ठाकुर–वासुदेव सिंह उर्फ त्रिलोचन षास्त्री के व्यक्तित्व को उजागर किया गया है। जो सच को झूठ और झूठ को सच बताने में इतने बड़े माहिर थे कि लोग उनके बातों में आकर आसानी से ठग जाते।

षास्त्री जी कभी झूठ नहीं बोलते। झूठ में इतना साहस ही नहीं कि उनके पास आकर सुरक्षित रह सके। वह उनके दांतों के बीच पड़कर चने की तरह पटपटा उठता है और सच होने के लिए तड़पने लगती है।''[1]

तीसरा संस्मरण 'नागानंदचरितम् वल्द अस्सी चौराहा में' डॉ. काषीनाथ सिंह जी ने नागानंद मुक्तिकंठ की गतिविधियों पर प्रकाष डाला है। लेखक का कहना है कि नागानंद मुक्तिकंठ एक मात्र ऐसे व्यक्ति है जो साहित्य के प्रति निश्ठावान रहते हुए भी साहित्यकार न बन सके। इसमें नागानंद और धूमिल के रिष्ते उनकी रचना षैली, उनका अंधविष्वास, रामनारायण के साथ धूमिल का संबंध, नागानंद की कमजोरियां, होषियारी, दूसरों को मूर्ख बनाने की प्रवृत्ति, उनकी न बदलनेवाली आदातों पर तीखा प्रहार करते हुए अंत में काषीनाथ जी उनकी तुलना ट्रैफिक पुलिस के साथ की है जो दूसरों को सही दिषा पर चलने का निर्देष देता है लेकिन खुद वही खड़ा रह जाता है।

चौथा संस्मरण 'जी ही जाने है आह मत पूछो' में लेखक ने धूमिल के साथ अपने अंतरंग संबंधों के अलावा, धूमिल की व्यक्तिगत, भावात्मक एंव मानसिक पहलुओं को विस्तृत आयाम में प्रस्तुत किया है। काषीनाथ सिंह जी ने धूमिल के व्यक्तित्व को सही रूप में परिभाशित किया है। लेखक के अनुसार धूमिल सिर्फ मुहंफट, तोज–तेष व्यक्तित्व वाला इंसान नहीं था, वस्तुत वे एक कोमल हृदय, भावात्मक इंसान, समर्पित कवि और उसकी दृश्टि कविता वेग बदलते हुए समाज से हाषिये पर नहीं देखना चाहता था। धूमिल लेखक के ऐसे दोस्त थे कि उनके जैसे दूसरा कोई दुबारा नहीं मिला। भावात्मक दृश्टि से यह संस्मरण मानवीय मूल्यों एवं संबंधों का अनुपम उदाहरण है। डॉ. काषीनाथ सिंह जी लिखते है 'धीरे'–धीरे हमारा संबंध दो लेखकों का नहीं दो परिवारों की तरह हो गया। मेरी मां या पिता या पत्नी को मुझसे कोई षिकायत होती तो वे धूमिल से कहती और भाइयों को धूमिल से कोई षिकायत होती तो वे हमसे कहते।'2

किस्सा साढ़े चार यार इसे संस्मरण के माध्यम से काषीनाथ सिंह ने अपनी दोस्ती, जवानी और मस्ती एवं मुहब्बतों के उदाहरण प्रसंगों के माध्यम से प्रस्तुत किये हैं। यह संस्मरण मुख्यतः उनके चार दोस्तों (युवाकाल) के संबंध में हैं जिसके साथ लेखक ने अपनी जवानी के दिन बिताये है। वे चार दोस्त थे रविन्द्र कालिया, कमलेष्वर, दूधनाथ सिंह एवं विजयमोहन इनके अलावा भी लेखक ने कुछ अन्य दोस्तों के बारे में उल्लेख किया है, जैसे– ज्ञानरंजन एवं कुमार विमल इसमें यह भी दर्षाया गया है कि किस तरह अच्छी दोस्ती आगे पारिवारिक बंधन में बदल जाती है अपने मित्र दूधनाथ के बेटे के साथ काषीनाथ सिंह जी की बेटी का विवाह इसी का एक उदाहरण है।

'देख तमाषा लकड़ी का' संस्मरण में लेखक ने अस्सी चौराहे के लोगों की दिनचर्या व्यवहार, न बदलने वाली आदतों से लेकर लोगों को जिन्दगी के दार्षनिक रूप में वाकीफ कराने का प्रयास किया है। इस संस्मरण की षुरूआत लेखक ने अस्सी के लोगों की भाशा से की है। 'हर–हर माहदेव के साथ 'भोसड़ीं के' नारा अस्सी का सार्वजनिक अभिमान है।'[3] इसी तरह संस्मरण में लेखक ने एक स्थान पर लिखा है –'ऐ दुनिया वाले। वह पालना लकड़ी है जिस पर बचपन में सोये थे। वह गुल्ली डंडा भी लकड़ी है जिससे खेले थे। वह पटरी भी लकडी है जिसे लेकर मदरसा गए थे। वह छड़ी भी लकड़ी है जिससे मुदर्रिस की मार खाई थी। व्याह का मंडवा और पीड़ा भी लकड़ी है जिस पर दुल्हन के साथ सोये थे और बुढापे का साहरा लाठी भी लकड़ी ही है। ऐ दुनियावाले, अंतकाल जिस टिकटी पर मसान जाते हो और जिस चिता पर तुम्हें लिटाया जाता है, सब लकड़ी है, ऐ दुनियावाले यह संसार कुछ नहीं सिर्फ लकड़ी का तमाषा है।''[4]

सातवां और इस पुस्तक का अंतिम संस्मरण– 'गरबीली गरीबी वह' में लेखक ने अपने बड़े भाई का घर, परिवार की समस्याओं से चिन्तित, आर्थिक विपन्नता–कठिनाइयों अपमानों के बावजूद दूर्दमनीय व्यक्ति के रूप में पाठकों के सामने प्रस्तुत किये है। लेखक के अनुसार गुरू होने का उत्तरदायित्व तो उन्होंने निभाया

ही है लेकिन एक बड़े की जिम्मेदारियां को भी भली–भांति जानते है। उन्होंने अपने छोटे भाई में भी आत्मविष्वास और स्वाभिमान कर आलोक भरना चाहा, जगह–जगह उपदेष भी दिया। काषीनाथ सिंह को भेजे एक पत्र में नामवर जी लिखते हैं।– 'यह कहने की जरूरत नहीं है कि तुम जिम्मेदार मर्द ही, नाबालिग लड़के नहीं। जिम्मेदारी बेषक अब आयी है। लेकिन मुझे पूरी उम्मीद है कि तुम उसे समझदारी के साथ निभाओगे।'[5]

इस प्रकार प्रस्तुत संस्मरण में लेखक ने अपने गुरू एवम् भाई के जीवन के महत्त्वपूर्ण पक्षों को बेहद संजीदगी एवम् आत्मीयता के साथ उजागर करने का प्रयास किया है। नामवर जी का संघर्शमयी जीवन तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में भी न डिगने का सामर्थ्य पाठकों में आत्मविष्वास एवं स्वाभिमान का संचार करता है। जिसकी आवष्यकता आज हम सबको है।

इस प्रकार 'याद हो कि न याद हो' संस्मरण काषीनाथ सिंह जी का एक सफल संस्मरण है। जिसमें उन्होंने अपने मां, पिता, भाइयों, परिवारों, भाभी, दोस्तों आदि सब की अच्छाइयां, बुराइयां तथा कमियों का उल्लेख किया है। जिसके लिए उन्हें अपनों और दोस्तों के तीखे वचन भी सुनने पड़े गांव से लेकर षहर तक की जीवन यात्रा तथा उसमें आए उतार–चढ़ाव को इन संस्मरणों को पढ़ने से हमें लोगों के जीवन को निकट ये जानने का अवसर मिलता है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. काषीनाथ सिंह, याद हो कि न याद हो, पृ.सं – 43।
2. डॉ. काषीनाथ सिंह, याद हो कि न याद हो, पृ.सं – 84।
3. डॉ. काषीनाथ सिंह, याद हो कि न याद हो, पृ.सं – 157।
4. डॉ. काषीनाथ सिंह, याद हो कि न याद हो, पृ.सं – 187।
5. डॉ. काषीनाथ सिंह, याद हो कि न याद हो, पृ.सं – 192।